इक्कीसवीं सदी और उज्ज्वल भविष्य: ब्रह्मांडीय संतुलन का विज्ञान

प्रकृति, कर्म और चेतना के अदृश्य प्रवाह का तार्किक विश्लेषण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – *"मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।""*

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

क्रिया और प्रतिक्रिया का भौतिक विज्ञान

"वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

दो दिशाएँ: सदुपयोग बनाम दुरुपयोग

मानव क्षमता और विज्ञान

+ धर्म और संयम

सतयुग: शांति, प्रगति, और सर्वत्र खुशहाली।

+ लालच और स्वेच्छाचार

कलियुग: भय, विषाक्तता, और विनाश के घटाटोप।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

पृथ्वी का पारिस्थितिक फीडबैक लूप

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के

NotebookLM

विस्फोटक स्थिति का वैज्ञानिक सत्य

Macro View

भ्रम: लटू की तरह घूमती पृथ्वी और सामान्य दिखते दिन।

Micro View

वास्तविकता: हम सब महाविनाश के बारूद के ढेर पर बैठे हैं। यदि दिशा न बदली, तो प्रलय निश्चित है।

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ गुरुव्व युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नियन्ता की वैज्ञानिक सन्तुलन व्यवस्था

जिस प्रकार शरीर की जीवनी शक्ति बीमारी को खदेड़ती है,
वैसे ही स्रष्टा विनाश को रोकता है।

NotebookLM

अंधकार से प्रकाश का भौतिक विज्ञान

पतन की चरम सीमा ही
नए आलोक का ट्रिगर है।

उषाकाल - Sunrise

सृष्टि अव्यवस्था को
अधिक समय तक
सहन नहीं करती।

ब्रह्म मुहूर्त - Deepest Dark

> “वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
>
> — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर से "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश और आप सबसे कहियेगा तसे कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे क्रान्तिधर्मी सहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग सन्धिकाल: गोधूलि बेला

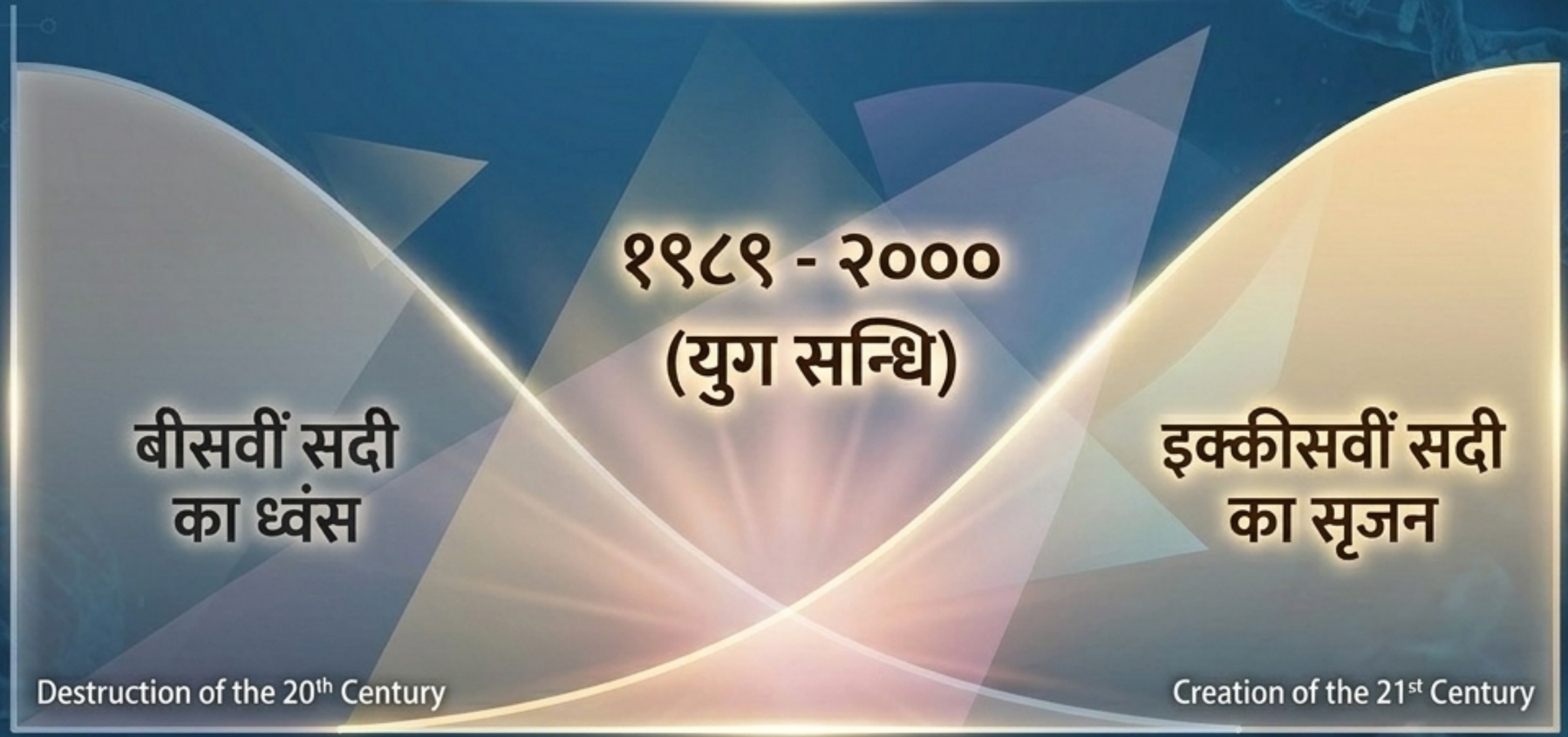

यह समय प्रसव-पीड़ा के समान है—एक ओर पुरानी अवांछनीयताओं के टूटने की कराह, दूसरी ओर नए युग के जन्म का उल्लास।

NotebookLM

ज्वार-भाटे जैसी उथल-पुथल

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

व्यापक परिवर्तनों का ऐतिहासिक प्रमाण

इतिहास गवाह है: विनाशकारी घटाटोप हमेशा एक नए स्वर्णिम युग को जन्म देते हैं।

आतंक का चरमोत्कर्ष	ईश्वरीय हस्तक्षेप	परिणाम
रावण का आतंक →	राम का अवतार →	रामराज्य (Satyuga)
कंस का अत्याचार →	कृष्ण का प्रादुर्भाव →	धर्म की स्थापना
निरंकुश राजतंत्र / दास प्रथा →	विचारक्रांति एवं प्रजातंत्र →	आधुनिक स्वतंत्रता

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबरे सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

अदृश्य जगत का विज्ञान

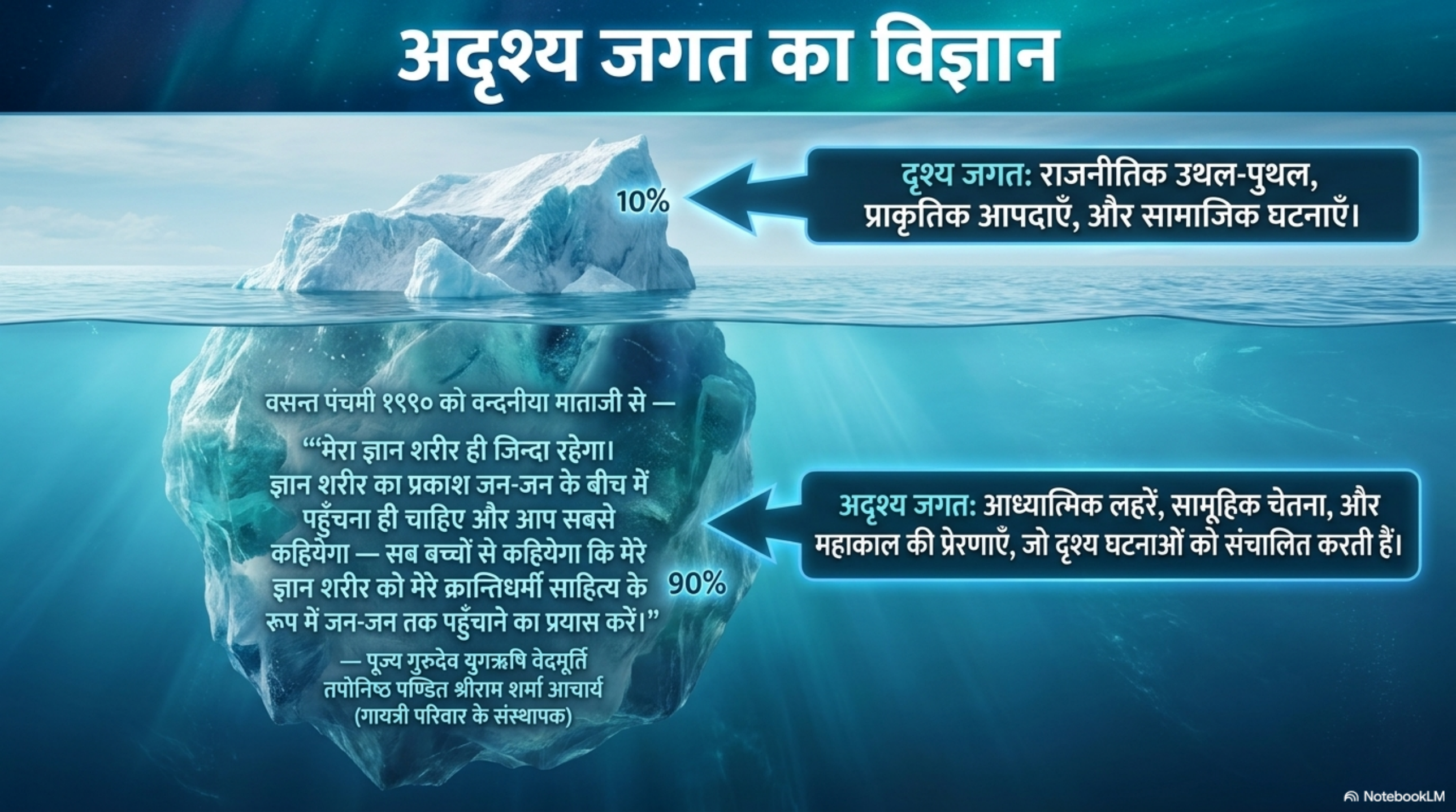

NotebookLM

सूक्ष्म जगत के अध्यात्म उपचार

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
"मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे
ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानवीय पुरुषार्थ:
तप-उपचार, और
सामूहिक प्रार्थना।

दैवीय प्रवर्धन:
देवताओं की संयुक्त शक्ति द्वारा
ऊर्जा का प्रवर्धन

नवयुग की पृष्ठभूमि:
एक अदृश्य आधार का निर्माण
जो विश्व को बदल देगा।

NotebookLM

महापरिवर्तन का समग्र मॉडल

NotebookLM

इस ब्रह्मांडीय बदलाव में हमारी भूमिका

सौभाग्य के अधिकारी:
इतिहास के सबसे महान परिवर्तन का हिस्सा बनने का गौरव।

सृजन प्रयास का माध्यम बनना:
सकारात्मक कार्यों और विचार-क्रांति में अपनी ऊर्जा लगाना।

व्यक्तिगत कर्म में सुधार:
अपनी जीवनशैली को धर्म और संयम से जोड़ना।

अदृश्य प्रवाह को समझना:
समय की गति और नियन्ता की योजना पर विश्वास करना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

"मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।"

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM

उज्ज्वल भविष्य की सुनिश्चितता

कालचक्र घूम रहा है। विनाश की विभीषिकाएँ छंट रही हैं और संतुलन बहाल हो रहा है।
इक्कीसवीं सदी एक अत्यधिक परिष्कृत, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से संतुलित युग का सूर्योदय है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — "मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।""

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM